समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

• प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०१६ • वर्ष : २० • अंक : ०४ (निरंतर अंक : २३२)
• भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : १६+४ (आवरण पृष्ठ सहित)

मासिक समाचार पत्र

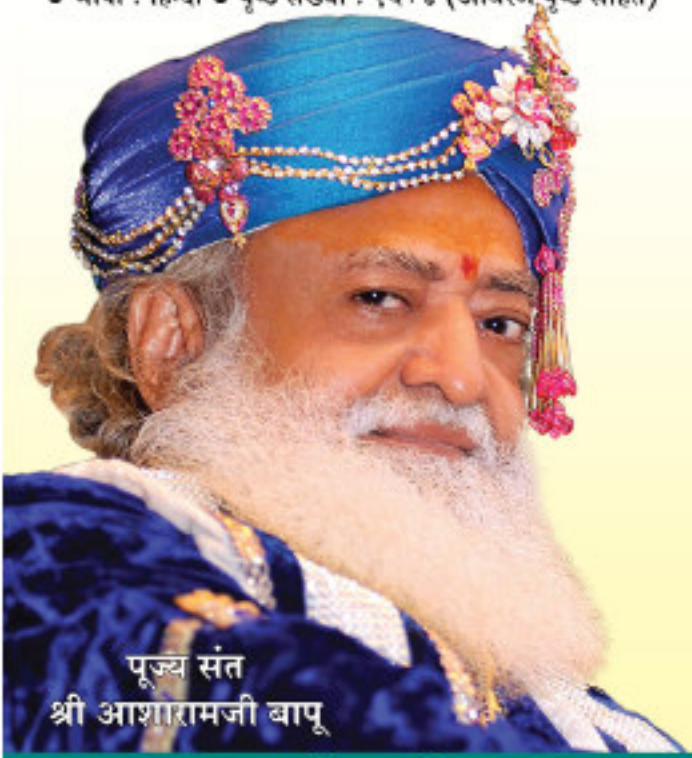

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

आप्तकाम महापुरुष की करुणा व प्रेम की थाह नहीं

पृष्ठ ५

सत्संग, भगवन्नाम-कीर्तन, निष्काम सेवा से अंतःकरण शुद्ध होता है और राग-द्वेष से मलिन व अनर्थकारी होता है । 'सबमें अपना परमात्मा है, सबका कल्याण हो ।' इस भाव से हृदय शीघ्र शुद्ध होता है और शुद्ध हृदय में ही ज्ञान का प्रकाश होता है।

- पूज्य बापूजी

अहमदाबाद आश्रम में सामूहिक श्राद्ध एवं पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस पर भव्य कार्यक्रम

भगवान संत बन जाते हैं और संत भगवान ! यह आनंद लूटना हो तो बस, भगवान से संत-मिलन की प्रार्थना करो ! - श्री हनुमान प्रसाद पोद्दारजी ६

विजयप्राप्ति का पाशुपतास्त्र ३

संत श्री आशारामजी आश्रमों में हुए सामूहिक श्राद्ध कार्यक्रम

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें ।

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २० अंक : ४ (निरंतर अंक : २३२)

प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०१६ मूल्य : ₹ ३.५०

पृष्ठ संख्या : १६+४ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल

प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सदस्यता शुल्क :

भारत में :
(१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५०
(३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में :
(१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

★ Email: lokkalyansetu@ashram.org
ashramindia@ashram.org

★ Website: www.lokkalyansetu.org • www.ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- विजयप्राप्ति का पाशुपतास्त्र..... ४
- श्रीविष्णुसहस्रनाम रसधार..... ६
- कितने थे और कितने बचे ?..... ७
- आप्तकाम महापुरुष की करुणा व प्रेम की थाह नहीं..... ८
- संतों का संग अमोघ - श्री हनुमान प्रसादजी..... १०
- मैं निश्चिंत कैसे रह सकता हूँ ?..... १२
- साँईं श्री लीलाशाहजी की अमृतवाणी..... १३
- गुरुकृपा से पुनर्जीवन मिला..... १६
- ये है गुरु की गुरुता - संजय राजभर..... १७
- बल के पहले हो विनय..... १८
- बहुत गयी थोड़ी रही..... २०
- जब संत ने राजा को नौकरी पर रखा..... २१
- ब्रह्मचर्य में सहायक लज्जावृत्ति..... २२
- सुर्खियाँ - रू.भ. ठाकुर..... २५
- संस्कृतिप्रेमी सज्जनों के हृदयोद्गार..... २७
- पत्तेदार शाक खायें, शरीर को स्वस्थ व निरोगी बनायें..... २८
- इन तिथियों का लाभ अवश्य लें..... ३०
- सेवा का महत्त्व समझो !..... ३१
- भाइयों का आपस में कैसा व्यवहार हो ?..... ३३
- बापूजी के पत्र ने की कैंसर की छुट्टी - प्रेमसिंह... ३४
- बुद्धिगत ज्ञान का आदर करें..... ३५

◆ विभिन्न टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS
रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

न्यूज़ WORLD
रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

मंगलमय
www.ashram.org पर उपलब्ध

श्री विष्णुसहस्रनाम रसधार

भगवान का ३२वाँ नाम आता है **'भावनः'** अर्थात् समस्त भोक्ताओं के कर्मों के फलों को उत्पन्न करनेवाले।

आप्तकाम महापुरुष की
करुणा व प्रेम की थाह नहीं

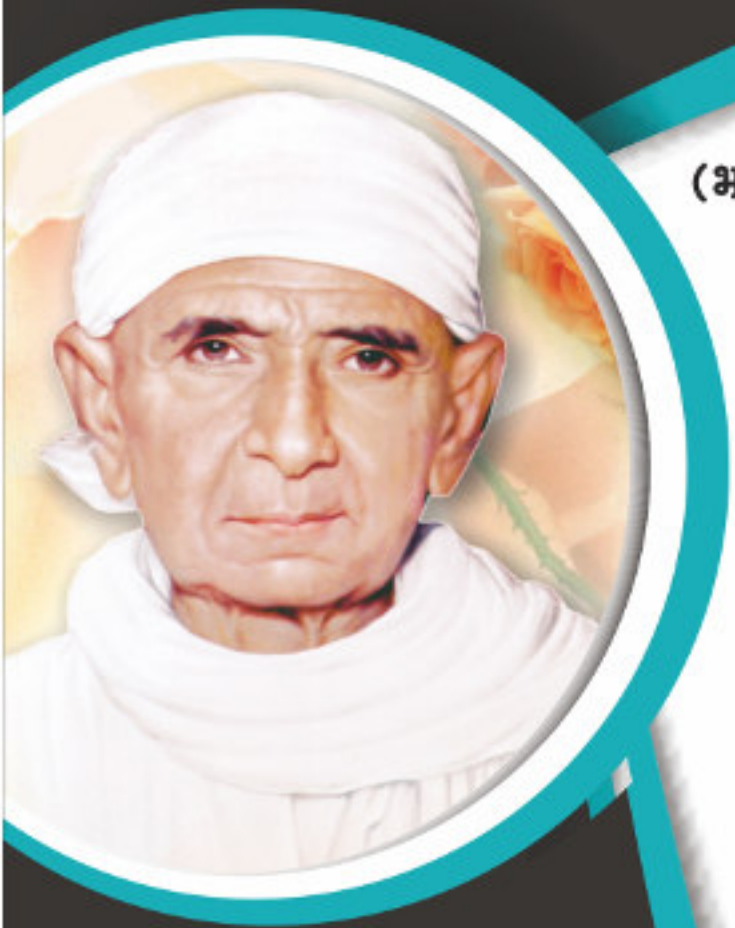

(भगवत्पाद साईं श्री लीलाशाहजी महाराज महानिर्वाण दिवस : ९ नवम्बर)

पूज्य बापूजी के सद्गुरुदेव साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का हृदय प्राणिमात्र की पीड़ा से द्रवीभूत हो उठता था । स्वामीजी जहाँ पर सत्संग करने बैठते थे वहीं बिच्छू का पौधा लगा था, जिसके स्पर्श से बिच्छू के काटने जैसी जलन होती है । उसे वहाँ से हटाये बिना ही वर्षों तक सत्संग करते रहे । स्वामीजी का हृदय करुणा व प्रेम से इतना भरा था कि अपने भक्त की पुकार सुन उसके दुःख निवृत्त किये बिना नहीं रहते थे।

स्वामीजी का हृदय करुणा व प्रेम से इतना भरा था कि अपने भक्त की पुकार सुन उसके दुःख निवृत्त किये बिना नहीं रहते थे।

भगवत्पाद साईं श्री लीलाशाह जी महाराज
महानिर्वाण दिवस : ९ नवम्बर

करुणा व प्रेम की थाह नहीं

गायों का भी रखते थे खयाल

गायों के लिए घास-चारे की व्यवस्था होती रही

संतों का संग

अमोघ

सच्चे संतों के चरणों में नमस्कार करो, उनका ध्यान करो, उनकी वाणी को वेदवाक्य से बढ़कर समझो, उनकी चरणरज को अपनी अमूल्य सम्पत्ति समझो, उनकी आज्ञा का प्राणपण से पालन करो, उनकी इच्छा का अनुसरण करो, उनके इशारे पर उठो-बैठो। देखो, तुम्हारा कितना जल्दी मंगल होता है !

– श्री हनुमान प्रसाद पोद्दारजी

(गतांक का शेष)

संत ब्रह्म हैं, ब्रह्मस्थित हैं, ब्रह्मज्ञानी हैं, ब्रह्मपरायण हैं, ब्रह्ममय हैं। संत परमात्मा के आश्रय हैं, परमात्मा हैं, परमात्मा के स्वरूप हैं, परमात्मा के प्यारे हैं।

संत भगवान की दिव्य, नित्य लीला में सहायक हैं, नित्य लीला के नट हैं, लीला के

मैं निश्चिंत कैसे रह सकता हूँ ?

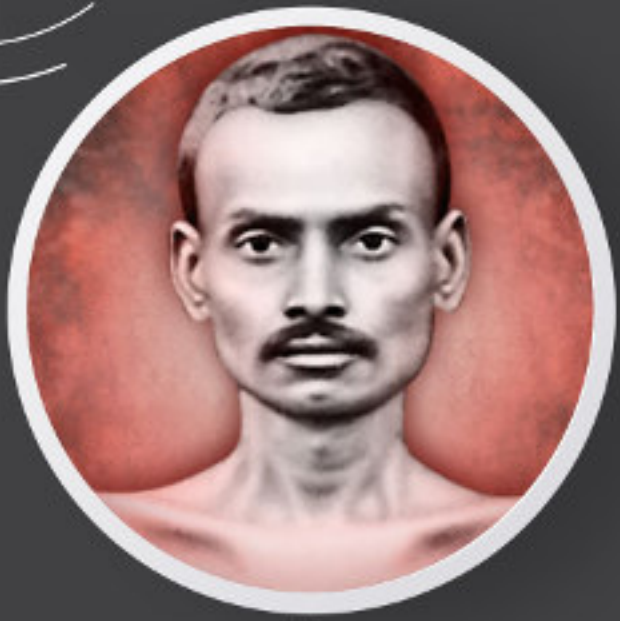

रायचंद भाई बड़े उदार हृदय के व्यक्ति थे। वे पहले मुंबई में जवाहरात का व्यापार करते थे । उन्होंने एक व्यापारी से सौदा किया । यह निश्चित हो गया कि अमुक तिथि तक, अमुक भाव में इतने जवाहरात वह व्यापारी देगा । व्यापारी ने रायचंद भाई के साथ लिखा-पढ़ी कर ली।

संयोगवश जवाहरात के मूल्य बढ़ने लगे और इतने अधिक बढ़ गये कि यदि रायचंद भाई को उनके निश्चित किये जवाहरात वह व्यापारी दे दे तो उसे इतना घाटा होता कि अपना सर्वस्व नीलाम करना पड़ता।

रायचंद भाई जवाहरात के उस समय के बाजार-भाव का पता लगाकर उस व्यापारी की दुकान पर पहुँचे। उन्हें देखते ही वह व्यापारी घबरा गया, बोला : ''रायचंद भाई ! आप आश्वस्त रहें, मैं किसी भी कीमत पर अपना किया हुआ वादा पूरा करूँगा । कृपया चिंता न कीजिये।''

रायचंद भाई बोले : ''मैं जानता हूँ कि तुम अपना वादा जरूर पूरा करोगे लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि तुम बहुत चिंतित

(शेष पृष्ठ १५ पर)

गुरुकृपा से पुनर्जीवन मिला

निष्ठावान शिष्यों, भक्तों, श्रद्धालुओं की श्रद्धा गुरुओं से चमत्कार करा लेती है।

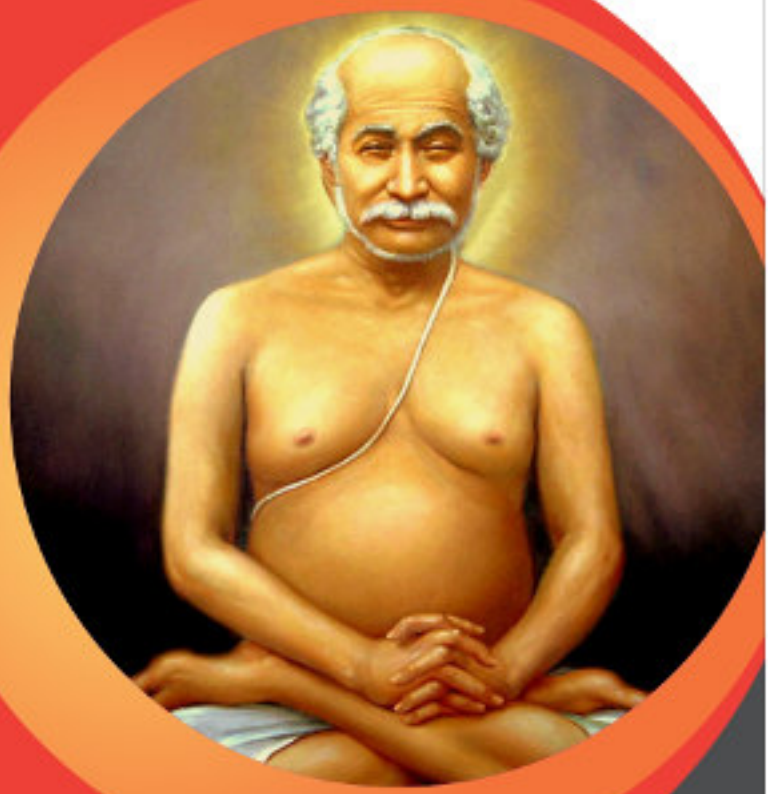

योगी श्यामाचरण लाहिड़ीजी

प्रियनाथ ने सोचा कि 'अब तक तो राम मर चुका होगा। अब यह दवा किसे पिलाऊँगा ?' फिर विचार किया कि 'गुरुदेव की आज्ञा हुई है तो जो होगा मंगलमय ही होगा।' वे जल्दी से मित्र के पास पहुँचे तो देखा कि उसके शरीर में प्राण का कोई संकेत नहीं है फिर भी विश्वासपूर्वक उन्होंने राम के मुँह में तेल की कई बूँदें डाल दीं। वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने देखा कि धीरे-धीरे प्राणहीन देह हिलने-डुलने लगी, साँस भी चलने लगी और राम को पुनर्जीवन मिला।

बल के पहले हो विनय

जिसके हृदय में परमात्मा के लिए प्रेम और सच्ची तड़प हो, परमात्मा उससे दूर नहीं रह पाते। हमारे हृदय में परमात्मा को पाने की तड़प नहीं होती, तभी हमें वह दूर भासता है। यदि तड़प हो जाय तो ईश्वर तो हमारा अंतर्यामी है, उसी क्षण उस सच्चिदानंदस्वरूप परमात्मा का दीदार हो जाय।

सुग्रीव से युद्ध करने जा रहे बालि से जब उसकी पत्नी तारा ने कहा : ''जिनसे सुग्रीव की मित्रता हुई है वे तो बहुत बलवान हैं।'' तो बालि कहने लगा : ''वह तो साक्षात् ईश्वर है।''

कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ।
(श्री रामचरित. कि.कां. : ७)

'हे भीरु (डरपोक) ! प्रिये ! सुनो, श्री रघुनाथजी समदर्शी हैं।'

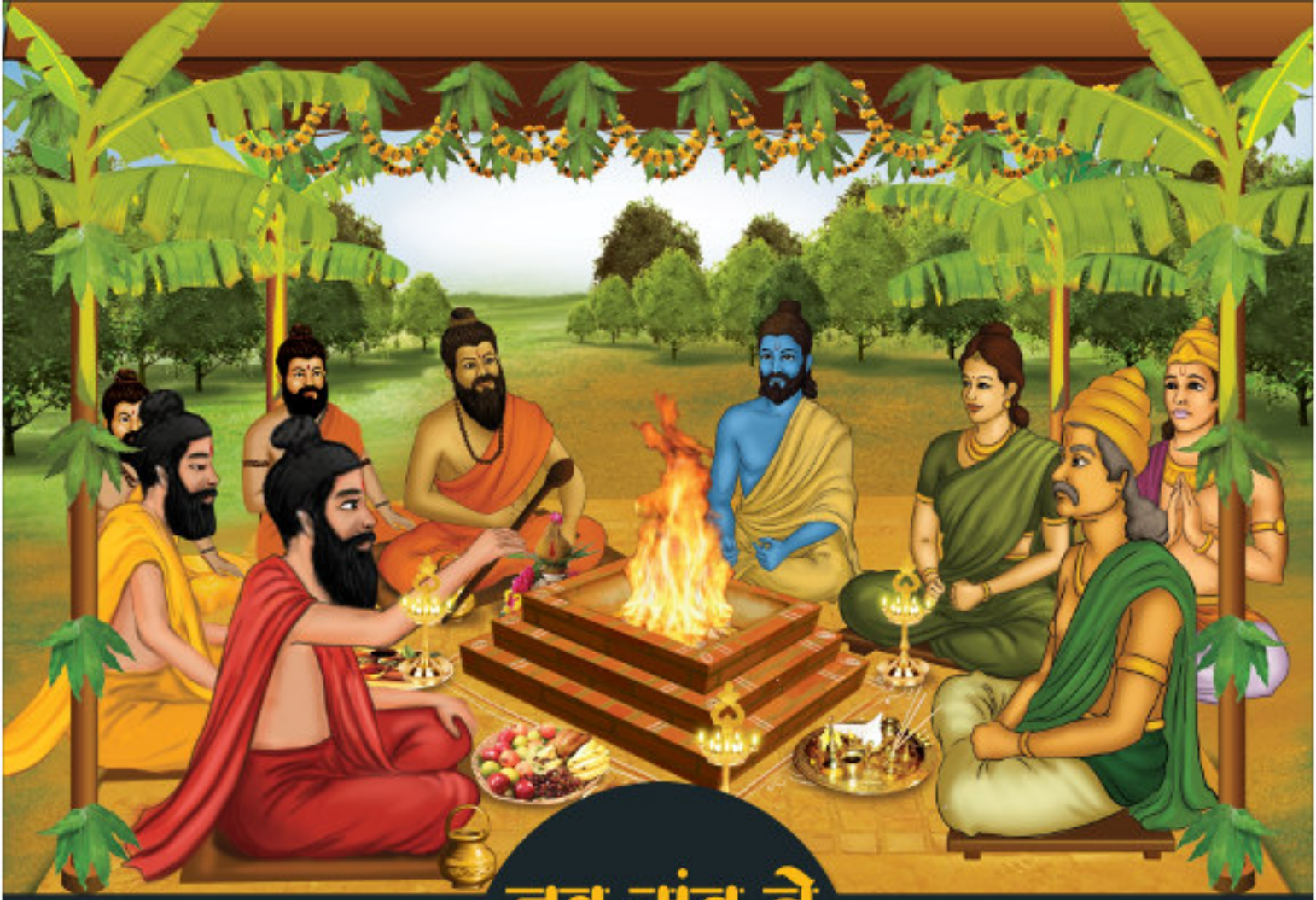

जब संत ने राजा को नौकरी पर रखा

ईश्वर का, ब्रह्मस्वरूप सद्गुरुदेव का दिया दैवी कार्य तत्परता से पूर्ण करो और फल की चिंता छोड़कर अच्छी-बुरी सभी परिस्थितियों को पसार होने दो, किसीमें राग-द्वेष मत करो। साक्षीभाव में स्थित होने का अभ्यास करो। इससे तुम कर्मयोगी बन जाओगे।

एक सज्जन स्वभाव के राजा थे। प्रजा को किसी वस्तु का अभाव न हो, कोई परेशानी न हो ऐसे प्रयत्न में वे सदैव रत रहते थे। लोग कई प्रकार की समस्याएँ लेकर आते, राजा उनकी समस्याएँ सुलझाते-सुलझाते थक जाते।

एक दिन दुःखी होकर वे अपने गुरु के पास गये, जो वन में रहते थे और बोले : ''गुरुदेव ! मैं इस राज्य की झंझटों से दुःखी हो गया हूँ। एक समस्या को हल करता हूँ तो दूसरी खड़ी हो जाती है और दूसरी को सुलझाता हूँ तो तीसरी। प्रतिदिन नयी

(शेष पृष्ठ २४ पर)

ब्रह्मचर्य में सहायक लज्जावृत्ति

(गतांक से आगे)

मानव-संस्कृति, जो पशु-जीवन से उन्नत है, शीघ्रता से पतन की ओर जायेगी। मर्यादा का गुण होने से ही मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। जब मर्यादा ही नहीं रही तो मनुष्य और पशु में अंतर क्या रहा!

लज्जालोप के परिणाम

२०वीं सदी के मध्यकाल में समाज में से लज्जा का प्रभाव शीघ्रता से घटना प्रारम्भ हुआ था और आज वह भयानक स्थिति तक पहुँच गया है। इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण है आज के युवक-युवतियों की वेशभूषा। लोग लज्जा के प्रतीकरूप कपड़े पहनने का बाहरी दिखावा करके भी नग्नता दिखे ऐसे कपड़े पहनने लगे हैं। निर्लज्जता और अधिक चंचलता आज आधुनिकता के लक्षण बनने से फैशन के रूप में निर्लज्ज रूप-प्रदर्शन की मानो होड़ लगी है। लज्जालोप के दुष्परिणाम इस प्रकार हैं :

सुर्खियाँ

❊ हाल ही में हुए एक शोध के अनुसार लोगों की दूर की नजर तेजी से कम हो रही है। इसका मुख्य कारण कम्प्यूटर, स्मार्टफोन एवं टीवी देखते हुए ज्यादा समय बिताना है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि ऐसे चलता रहा तो २०५० तक दुनिया के आधे लोग इस रोग के शिकार हो जायेंगे। उपरोक्त उपकरणों का अति उपयोग खतरे की घंटी बजा रहा है, अभी से चेत जाना हितकारी होगा।

❊ सर्वोच्च न्यायालय ने २०१४ के एक निर्णय में कहा था कि दहेज उत्पीड़न के मामलों में मुकदमा दर्ज होने पर पुलिस द्वारा आरोपियों को अचानक गिरफ्तार न किया जाय। इस निर्णय के विरुद्ध राष्ट्रीय महिला आयोग ने एक सुधारात्मक याचिका दाखिल की थी, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया। २०१४ के फैसले में यह भी कहा गया था कि पुलिस अधिकारियों को आरोपियों की गिरफ्तारी के पहले दंडाधिकारी की अनुमति लेना जरूरी है।

पत्तेदार शाक खायें,
शरीर को स्वस्थ व निरोगी बनायें

हरे पत्तोंवाले शाक विटामिन्स व विभिन्न खनिज तत्त्वों से भरपूर होते हैं। इनमें पौष्टिक तत्त्व व रेशे भी अधिक होते हैं। ये एक बेहतर प्राकृतिक टॉनिक का कार्य करते हैं।

भाइयों का आपस में

कैसा व्यवहार हो ?

भीष्म पितामह कहते हैं : ''भरतनंदन ! बड़े भाई को चाहिए कि यदि छोटे भाइयों से कोई अपराध हो जाय तो उनसे ऐसी बात करे जिससे उनकी अपराध करने की प्रवृत्ति दूर हो जाय। यदि बड़ा भाई प्रत्यक्ष रूप से दंड देता है तो छोटे भाइयों का हृदय छिन्न-भिन्न हो जाता है और वे उस दुर्व्यवहार का लोगों में प्रचार करते हैं।

हर घर में हो मंत्रशक्ति के रहस्यों से भरपूर यह अद्भुत संग्रह

मंत्र का प्रभाव
मंत्रजप महिमा
मंत्रशक्ति की दस बातें
मंत्रदीक्षा से जीवन-विकास
मंत्रजप से भाग्योदय और स्वास्थ्य-लाभ

मंत्र माने क्या ? मंत्र = मन तर जाय दुःखों, चिंताओं, तनावों, कष्टों, विघ्न-बाधाओं और समस्त बंधनों से, ऐसी ऋषियों-महापुरुषों की रामबाण कुंजियाँ। ❊ मंगल ग्रह की शांति, क्रोध को वश करने का बीजमंत्र आदि अनेक मंत्रों का संग्रह

इस सेट के साथ प्रसादरूप में पायें संत-महात्माओं का अनमोल प्रसाद : आयुर्वेदिक संतकृपा नेत्रबिंदु

वीसीडी सेट का मूल्य : मात्र ₹ १९० (डाक खर्च सहित)

शहदयुक्त त्रिफला टेबलेट

यह गोली श्रेष्ठ रसायन, बलप्रद एवं पौष्टिक है। यह नेत्रों के लिए हितकर, वर्ण एवं स्वर को उत्तम करनेवाली, वीर्यवर्धक, भूख बढ़ानेवाली एवं रुचिकारक है। इसके नियमित सेवन से मस्तिष्क-रोग, दंतरोग, हृदयरोग एवं गुर्दों की विभिन्न बीमारियों से रक्षा होती है। यह चर्मरोग, मोटापा, दमा, खाँसी, कब्ज, पेट का फूलना, अजीर्ण आदि में भी लाभदायक है।

पंचगव्य घी

यह उन्माद, अपस्मार, मानसिक अवसाद आदि मानसिक व्याधियों में विशेष हितकर है। क्षय, दमा, खाँसी, धातुक्षीणता, जीर्णज्वर, रक्ताल्पता तथा त्वचाविकारों में लाभदायक है।

तुलसी टेबलेट

यह पौष्टिक, शक्तिवर्धक व उत्कृष्ट वीर्यवर्धक है। यह स्निग्ध, त्रिदोषशामक, कृमिनाशक तथा हृदय, मूत्र व प्रजनन संस्थान एवं आँतों के लिए विशेष हितकारी है। इसके सेवन से भूख खुलकर लगती है, धातु की रक्षा होती है तथा रोगप्रतिकारक शक्ति, ओज-तेज व बल में वृद्धि होती है।

संजीवनी टेबलेट

प्रचंड रोगनाशक क्षमता से युक्त यह गोली व्यक्ति को शक्तिशाली, ओजस्वी, तेजस्वी व मेधावी बनाती है। सप्तधातु व पंचज्ञानेन्द्रियों को दृढ़ बनाकर वृद्धावस्था को दूर रखती है। हृदय, मस्तिष्क व पाचन-संस्थान को विशेष बल प्रदान करती है।

उपरोक्त वीसीडी सेट एवं उत्पाद आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क : ०९२१८१११२३३ ई-मेल : hariomcare@gmail.com
रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३० ई-मेल : satsahityamandir@gmail.com

पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस पर निकली संकीर्तन यात्राओं में उमड़ी विशाल जनमेदनी

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2015-17
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2017
LWPP No. CPMG/GJ/45/2015
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2017)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

अहमदाबाद

सीहोर (म.प्र.)

सूरत

आगरा (उ.प्र.)

पुणे (महा.)

वापी (गुज.)

रेवाड़ी (हरि.)

उज्जैन

पाँटा साहिब (हि.प्र.)

कवर्धा (छ.ग.)

भोपाल

देहरादून

आजमगढ़ (उ.प्र.)

भीलवाड़ा (राज.)

ऊना (हि.प्र.)

गुना (म.प्र.)

काँगड़ा (हि.प्र.)

राउरकेला (ओड़िशा)

उल्हासनगर (महा.)

बाड़मेर (राज.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।